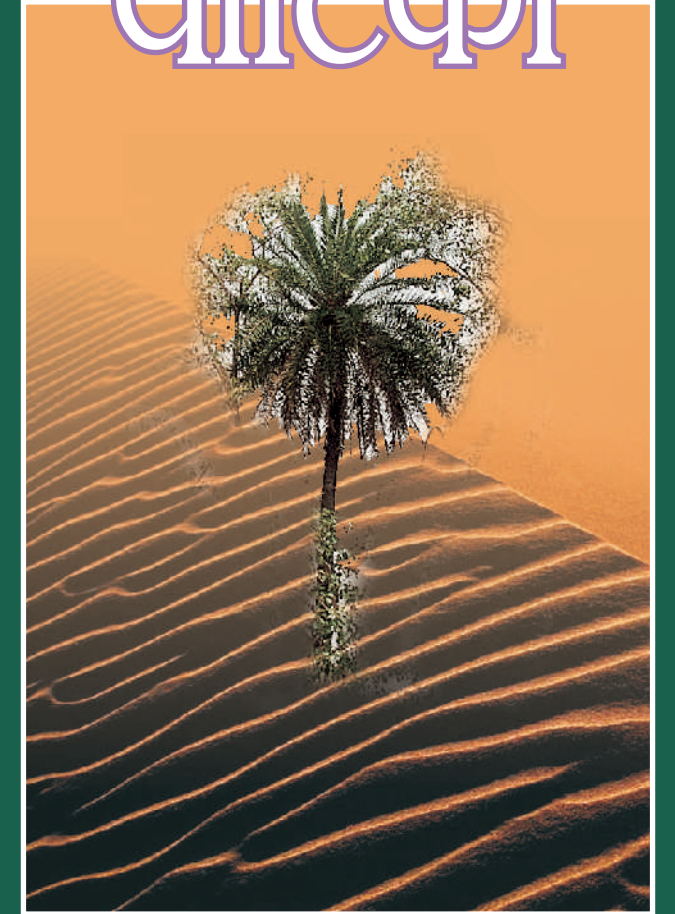


कुरानी वृक्ष वाटिका



उ० प्र० राज्य जैवविविधता बोर्ड

- अंजीर बवासीर खत्म करता है और जोड़ों के दर्द (गठिया) में भी लाभ पहुँचाता है। इसका उल्लेख कुरान शरीफ़ की सूरा "तीन" में हुआ है और इस में अंजीर से कसम (शपथ) खायी गयी है।

बेरी :

बेरी का अरबी नाम "सिदरह" है। बेरी के पेड़ की लकड़ी ईंधन के काम में आती है। बेरी के पेड़ को बाड़ के तौर पर लगाया जा सकता है। इसके फल खाये भी जाते हैं। फल व पत्तियाँ औषधि के काम में भी लायी जाती हैं। सिदरह के नाम से बेरी का उल्लेख कुरान शरीफ़ में तीन बार किया गया है। कुछ विद्वानों ने सिदरह को ऐसा पेड़ बताया है जो देवदार की तरह होता है। जिसको अंग्रेजी में सीदार भी कहते हैं। यह लेबनान का पेड़ है।

शजरे मिसवाक (पीलू) :

शजरे मिसवाक की लकड़ी में नमक और ख़ास किस्म का रेजिन (Resin) पाया जाता है। जो दाँतों में चमक पैदा करता है। मिसवाक करने से जब इस की एक तह दाँतों पर जम जाती है तो कीड़े (Bacteria) आदि से दन्त सुरक्षित रहते हैं। इस प्रकार चिकित्सकीय दृष्टि से मिसवाक दान्तों के लिए बहुत लाभदायक है। पीलू को कुरान शरीफ़ में सूरा "सबा" में खम्त का नाम दिया गया है।

- हज़रत मोहम्मद साहब ने मिसवाक के दस फायदे बताये हैं। मिसवाक मुँह को खुशबूदार करती है, मसूढ़ो को मजबूत करती है, नजर को तेज करती है, बलगम निकालती है, सोजिश दूर करती है, भूख बढ़ाती है इत्यादि। हज़रत मोहम्मद साहब ने मिसवाक करने पर जोर दिया है और हो सकता था कि हर नमाज से पहले इसको फर्ज कर दिया जाता था।

मेहंदी :

मेहंदी का पेड़ भारतीय समाज में बड़ा महत्व रखता है। इसके फूलों से 'इतरे-हिना' हासिल किया जाता है जो अपनी खुशबू से दिल व दिमाग दोनों को ताजगी पहुँचाता है। शादी विवाह एवं दूसरे धार्मिक त्योहारों और दावतों में इस का इस्तेमाल जरूरी समझा जाता है। हिना (मेहंदी) की पत्तियों से खेजाब बनाना, औरतों के हाथ पैर की मेहंदी के रंगों से सजाना, आज भी हमारे समाज में बहुत लोकप्रिय है, मेहंदी के पेड़ अधिकतर लोग अपने घरों में लगाते हैं। शादी के अवसर पर वर-वधू को मेहंदी लगायी जाती है। हज़रत मोहम्मद साहब ने फरमाया कि "अल्लाह के नज़दीक दरख़्त (पेड़ों) में निहायत प्यारा पौधा मेहंदी (हिना) का है" कुरान शरीफ़ की सूरा "देहर" की आयज में काफूर का उल्लेख किया गया है, जिसको बाज़ विद्वानों ने हिना भी बताया है।

- जब कभी हज़रत मोहम्मद साहब को जख़्म होता या काँटा चुभ जाता तो आप उस पर मेहंदी (हिना) का लेप लगाया करते थे।

बबूल :

बबूल की एक किस्म जो अरब में पायी जाती है उसे "तलहा" कहते हैं और इसी नाम से कुरान शरीफ़ की सूरा "वाक्या" में बबूल का उल्लेख किया गया है। तलहा को कुछ लोग केले का पौधा भी कहते हैं। भारत में इसे बबूल या केकड़ भी कहते हैं। इसके पेड़ से गोंद निकाली जाती है। आर्थिक लाभ के लिए पेड़ को लगाना लाभदायक होता है। इस की गोंद विश्व के अनेकों व्यापारिक प्रतिष्ठानों में प्रयोग में लायी जाती है। इस की गोंद केक, पेस्ट्रीज़, आईस्क्रीम और अन्य पेय पदार्थों के अतिरिक्त दवाओं, पेण्ट और स्याही वगैरह में भी इस्तेमाल होती है। बच्चे के जन्म के बाद माता को घी में तला हुआ गोंद खिलाने से खून की कमी दूर होती है, और शरीर को ताकत मिलती है। चिकित्सीय दृष्टि से यह एक बेहतरीन कार्बोहाइड्रेट पौलीमर है जिसमें डी-गैलेक्टोस एल-अरैबिनोज़ व यूरोनिक एसिड है।

तुलसी :

तुलसी की एक किस्म को कुरान शरीफ़ में दो बार "रेहान" के नाम से उल्लेख किया है। तुलसी (रेहान) की पत्तियाँ और फूल दोनों ही खुशबूदार होते हैं। इन से खुशबूदार तेल निकाला जाता है जिसमें मेथाइल सिन्नामेट, लिनालूल और टरपीनेन के तत्व मिलते हैं। इसके फूल और पत्तियाँ दोनों ही स्टीमुलेण्ट, कार्मिनेटिव, डेमल्सेण्ट हैं, पूरा पौधा ही कीटाणुनाशक की खुसूसियत रखता है इसके बीज यूनानी औषधि में मेदे की तकलीफ में दिये जाते हैं। ये बीज निहायत लोआबदार होते हैं। ये जिरयान और पेचिश जैसे रोगों की अचूक दवा है। यह ख़ाँसी में भी बहुत लाभदायक है।



वन तुलसी

उ.प्र. राज्य जैवविविधता बोर्ड

पूर्वी विंग, तृतीय तल, ए ब्लॉक, पिकप भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर,
लखनऊ (उ०प्र०) 226010; फोन : 0522-4006746, 2306491 द्वारा प्रकाशित
वेबसाइट : upsbdb.org; ईमेल : upstatebiodiversityboard@gmail.com

आलेख : शफीउल्लाह ख़ाँ, कार्यालय अधीक्षक (सेवानिवृत्त) वन विभाग, उत्तर प्रदेश;
छाया चित्र : संजीव कुमार शर्मा, सहायक वन संरक्षक। आलेख डॉ. एम.आई.एच. फारूखी की पुस्तक में
"Plants of Quran" पर आधारित है।

कुरानी वृक्ष वाटिका (कुरानिक आरबोरेटम)

हजरत मोहम्मद साहब ने फरमाया है :-

“आज से मक्के की धरती पर न तो किसी इन्सान का खून होगा और न ही किसी जानवर का शिकार किया जायेगा और किसी हरे-भरे दरख्त को भी नहीं काटा जायेगा।”

“आवश्यकतानुसार सिर्फ इज़खिर घास काट सकते हो, कोई दूसरा हरा-भरा वृक्ष नहीं”

“जो व्यक्ति सिदार (Cedar) काटेगा उसका सर जहन्नुम की आग में ढकेल दिया जायेगा।”

“दरख्त (पेड़ पौधे) लगाओ और जब इनसे मनुष्य फल खायेंगे या जानवर चारा चरेंगे तो इसका उतना ही सवाब मिलेगा जैसे फल या चारा खिलाकर मिलता है।”

पृथ्वी पर पाये जाने वाले जिन पेड़ों का नाम “कुरान-मजीद” में आया है उन पेड़ों को पृथ्वी के दूसरे पेड़ों पर एक विशिष्टता प्राप्त है। यँ तो सारे पेड़ पौधे “खालिके अरजो, समा” (ईश्वर) के ही पैदा किये हुए हैं लेकिन कुछ पेड़ पौधों का वर्णन अल्लाह ने स्वयं अपनी पुस्तक “कुरान मजीद” में किया है, जिस के कारण उन पेड़ पौधों का महत्व बढ़ जाता है। इन को लगाना इन की सुरक्षा करना और इन की देख भाल करना एक पुनीत कार्य है। इन से पर्यावरण भी शुद्ध होता है और आर्थिक लाभ भी होता है। कुरान में दिये गये कुछ पौधों का वर्णन किया जा रहा है -

खजूर :

खजूर का अरबी नाम “नख़्ल” और “तमर” है। खजूर मनुष्य के लिए एक अच्छा आहार है। इस की पौष्टिकता का पता इसके वैज्ञानिक चिकित्सकीय विश्लेषण से होता है। इस के फल में लगभग ६० प्रतिशत इनवर्ट सुगर और स्यूक्रोस के अतिरिक्त स्टार्च, प्रोटीन और वसा काफी मात्रा में मिलता है। इस के साथ ही विटामिन “ए”, विटामिन “बी”, विटामिन “बी₂” और विटामिन “सी” भी पाये जाते हैं। इस में सोडियम, कैल्शियम, सल्फर, क्लोरीन, फासफोरस और आर्ज़िन का पर्याप्त मात्रा में होना इस की पौष्टिकता को प्रमाणित करता है। फलों में खजूर को complete Food समझा जाता है।

- हज़रत मोहम्मद साहब ने एक जगह फ़रमाया “तुम खजूर नेहार मुँह खाया करो ऐसा करने से पेट के कीड़े मर जाते हैं”
- “खजूर खाने से गठिया का रोग नहीं होता” - हज़रत मोहम्मद साहब

कुरान की सूरह नहल- १०-११ में उल्लेख है :

अल्लाह वही है जिसने पानी बरसाया जिससे तुम्हें पीने को मिलता है और जिनसे सब्ज़ा ज़ार पैदा होते हैं और जिनमें तुम मवेशी चराते हो और उसी से तुम्हारे लिये खेती उगाते हैं। साथ ही जैतून, खजूर, अंगूर हर किस्म के फल मिलते हैं। बेशक इसमें बड़ी निशानी है उन लोगों के लिए जो सोचने की सलाहियत (योग्यता) रखते हैं।”

- हज़रत मोहम्मद साहब ने फ़रमाया “खजूर में हर बीमारी से शिफा (छुटकारा) है, निहार मुँह खाने से यह जहरों को मारता है। इस पेड़ का उल्लेख कुरान शरीफ़ में लगभग तीस बार किया गया है”

जैतून :

○ जैतून का अरबी नाम में जैत या अल-जैतून है। जैतून के कच्चे फल चटनी और अचार बनाने के काम में लाये जाते हैं। इस के पके हुए फल बहुत मीठे और स्वादिष्ट होते हैं। जैतून के तेल को खाने से मेदे की तेज़ाबियत दूर होती है। यह अल्सर को मिटाता है, चर्म रोगों में और मुख्यतः दाद जैसे चर्म रोगों के लिए बहुत लाभदायक है।

- हज़रत मोहम्मद साहब ने जैतून के सम्बन्ध में कहा है कि जैतून का तेल खाने में भी इस्तेमाल करो और मालिश में भी, इसलिए कि यह मुबारक (सम्मान योग) तेल है।
- हज़रत मोहम्मद साहब ने एक बार फरमाया “जैतून का तेल खाओ, उसे लगाओ यह पाक और मुबारक है”। जैतून का उल्लेख कुरान शरीफ़ में चार बार किया गया है।

अंगूर :

अंगूर को अरबी भाषा में “एनब” कहा जाता है। अंगूर ग्लूकोज़ और फ्रक्टोज़ प्राप्त करने का साधन है, यह तत्व अंगूर में १५ प्रतिशत से २५ प्रतिशत पाये जाते हैं। इस में टारटरिक एसिड और मैलिक एसिड भी पर्याप्त मात्रा में मौजूद है, सोडियम, पोटैशियम, कैल्शियम और आर्ज़िन की मात्रा भी इस में पाई जाती है। आर्थिक दृष्टि से इस की खेती बहुत लाभदायक है। हज़रत मोहम्मद साहब के जमाने में अंगूर की खेती मदीना व मक्का में बड़े पैमाने पर होती थी। कुरान शरीफ़ में इस का उल्लेख ग्यारह बार किया गया है।

अनार :

अनार का अरबी नाम “रुम्मान” है। अनार एक अद्भुत और कीमती फल



बेर

है। इस का पेड़, पत्तियाँ, फल सभी चिकित्सकीय दृष्टि से लाभ प्रद हैं। इस फल में बड़ी मात्रा में शकर (ग्लूकोज़ फ्रैक्टोज़) के अतिरिक्त मुख्य रूप से थायमिन और राइबोफ्लेविन और विटामिन “सी” भी अच्छी मात्रा में पाया जाता है। फासफोरस, सोडियम, कैल्शियम, सल्फर, ऑक्जेलिक अम्ल और केरोटीन प्राप्त करने का अनार एक अच्छा साधन है। आर्थिक दृष्टि से इस की खेती बहुत लाभदायक है।

- हज़रत मोहम्मद साहब ने फरमाया “अनार खाओ..... यह मेदे को नया जीवन देता है, जिसने अनार खाया अल्लाह (ईश्वर) उसके दिल को रौशन कर देगा”
- मोहम्मद साहब ने एक जगह कहा है कि ऐसा कोई अनार नहीं होता जिसमें ज़न्नत के अनारों का दाना शामिल न हो। अनार हृदय के मरीजों के लिये बहुत लाभदायक है जिसका उल्लेख कुरान शरीफ़ में तीन बार किया गया है।

अंजीर :

○ अंजीर को अरबी भाषा में “तीन” कहा जाता है। अंजीर एक स्वादिष्ट मेवा है। इस के शुष्क फलों में ५० प्रतिशत से अधिक शकर होती है। इस के अतिरिक्त थोड़ी मात्रा में सीट्रिक एसिड, मैलिक एसिड भी इन में मिलते हैं। एक बहुत महत्वपूर्ण तत्व फेसिन (Ficin), इस में पाया जाता है। जो पेट के रोगों में बड़ा लाभदायक है। गुर्दों को साफ करता है।

- हज़रत मोहम्मद साहब के पास कहीं से अंजीर से भरा हुआ थाल आया, उसे देखकर आपने फरमाया अगर कोई कहे कि कोई फल ज़न्नत से ज़मीन पर आ सकता है तो मैं कहूँगा कि यही वह है, क्योंकि अंजीर विलाशुबह (निःसन्देह) ज़न्नत का मेवा है।